ज्ञान के मोती

संपादक – कुशाग्र जैन

ज्ञान के मोती

गुरु पूर्णिमा विशेषांक

कुशाग्र जैन

ज्ञान के मोती

ISBN: 978-81-966404-9-1

भारत में कलामंच फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित।

समर्पित

गुरुओं को समर्पित

यह पुस्तक उन सभी पूज्य गुरुजनों के ज्ञान, प्रेरणा और निस्वार्थ मार्गदर्शन को समर्पित है, जिन्होंने ज्ञान की लौ जलाकर अनगिनत जीवन प्रकाशित किए हैं।
आपके अमूल्य शिक्षण, धैर्यपूर्ण मार्गदर्शन और अटूट विश्वास ने हमें जीवन के हर मोड़ पर सही राह दिखाई है। आपने न केवल हमें अक्षर ज्ञान दिया, बल्कि जीवन मूल्यों, नैतिकता और विनम्रता का पाठ भी पढ़ाया। आपके सान्निध्य में ही हमने घमंड को त्यागकर विनम्रता की शक्ति को समझा और ज्ञान के सच्चे मोतियों को पहचाना।
यह विनम्र प्रयास आपके चरणों में सादर अर्पित है।

रचना सूची

भूमिका

जीवन की वह अनमोल यात्रा, जो अनुभवों, शिक्षाओं और गहन चिंतन के धागों से बुनी गई है, उसमें कुछ अंतर्दृष्टियाँ दुर्लभ मोतियों की तरह चमकती हैं। ये वे ज्ञानवर्धक विचार हैं जो हमारे मार्ग को आलोकित करते हैं, हमारे निर्णयों को दिशा देते हैं और हमारे अस्तित्व को समृद्ध करते हैं। अत्यंत हर्ष और गहरे उद्देश्य की भावना के साथ, हम आपके समक्ष "ज्ञान के मोती" प्रस्तुत कर रहे हैं - एक ऐसा संग्रह जिसे इन्हीं अमूल्य अंतर्दृष्टियों को आपकी उंगलियों तक पहुँचाने के लिए तैयार किया गया है।

यह पुस्तक केवल विचारों का एक संकलन मात्र नहीं है; यह मानवीय अनुभव के विभिन्न पहलुओं से प्राप्त समझ के सार को निकालने का एक विनम्र प्रयास है। इतिहास के शाश्वत पाठों से लेकर मानवीय व्यवहार की सूक्ष्मताओं तक, आत्म-खोज की गहन गहराइयों से लेकर हमारी दुनिया में नेविगेट करने की व्यावहारिकता तक, इन पृष्ठों में समाहित प्रत्येक 'ज्ञान का मोती' चिंतन को जगाने और विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से है।

वास्तव में, ज्ञान की नींव अक्सर उन लोगों द्वारा रखी जाती है जो निस्वार्थ भाव से अपना ज्ञान साझा करते हैं। यह पुस्तक हमारे शिक्षकों, गुरुओं और मार्गदर्शकों की स्थायी विरासत का प्रमाण है - वे प्रकाश पुंज जिन्होंने अनगिनत जीवन को प्रबुद्ध करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। उनके अथक प्रयास, अटूट विश्वास और गहन शिक्षाएँ ही वे स्रोत हैं जिनसे सच्ची समझ प्रवाहित होती है। उनका ही गहरा प्रभाव है जिसने इस कार्य में निहित विचारों और सिद्धांतों को आकार दिया है, जिससे हमें क्षणिक ज्ञान और स्थायी समझ के बीच अंतर करने में मदद मिली है।

जैसे ही आप इन पृष्ठों को पलटेंगे, हम आपको आत्म-चिंतन और आत्म-बोध की यात्रा पर निकलने के लिए आमंत्रित करते हैं। आशा है कि इस पुस्तक में निहित 'मोती' आपकी आत्मा के साथ गूंजेंगे, स्पष्टता प्रदान करेंगे, कार्यों को प्रेरित करेंगे, और आपको अधिक अर्थपूर्ण और समझदार जीवन जीने के लिए सशक्त करेंगे। ये आपको हमेशा ज्ञान की तलाश करने, विनम्रता में दृढ़ रहने और जीवन तथा इसके अनेक शिक्षकों द्वारा दिए गए अमूल्य पाठों को सदैव संजोकर रखने के लिए एक सौम्य अनुस्मारक के रूप में कार्य करें।

आपके ज्ञान और विकास की सच्ची शुभकामनाओं सहित,

शिवानी शाह

निदेशक

कलामंच फाउंडेशन

प्राक्कथन

जीवन एक अंतहीन यात्रा है, और इस यात्रा में हमें पग-पग पर मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। यह मार्गदर्शन हमें प्रकाश की ओर ले जाता है, अज्ञान के अँधेरे को चीरता है, और हमारे भीतर छिपी संभावनाओं को जगाता है। जो इस पवित्र कार्य को सिद्ध करते हैं, वे ही हमारे गुरु कहलाते हैं - चाहे वे विद्यालय के शिक्षक हों, जीवन के अनुभवों से मिले मार्गदर्शक हों, या फिर स्वयं प्रकृति और ब्रह्मांड की शक्तियाँ। प्रस्तुत पुस्तक, **"ज्ञान के मोती"**, इन्हीं गुरुसत्ता को समर्पित एक विनम्र काव्य-प्रयास है।

यह संग्रह केवल शब्दों का एक पुंज नहीं, अपितु उन गहन अनुभूतियों और श्रद्धा का संगम है जो एक शिष्य के हृदय में गुरु के प्रति होती है। मेरा यह मानना है कि कविता, भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने का सबसे शुद्ध और शक्तिशाली माध्यम है। इसलिए, गुरु के विराट स्वरूप, उनके त्याग, उनके ज्ञान और उनके असीम प्रेम को अभिव्यक्त करने के लिए काव्य से बेहतर कोई और विधा नहीं हो सकती। इस पुस्तक में संकलित प्रत्येक कविता एक 'मोती' के समान है, जो गुरु के विविध रूपों और उनके प्रभाव को दर्शाती है - कभी एक दार्शनिक के रूप में, कभी एक शिल्पकार के रूप में जो जीवन को गढ़ता है, और कभी एक ऐसे माली के रूप में जो ज्ञान के पुष्प खिलाता है।

"ज्ञान के मोती" का उद्देश्य केवल गुरु महिमा का गान करना नहीं है, बल्कि पाठकों को अपने जीवन में गुरु के महत्व को पहचानने और उन्हें नमन करने के लिए प्रेरित करना भी है। यह पुस्तक आपको उन अदृश्य हाथों की याद दिलाएगी जो आपको गिरने से बचाते हैं, उन आवाज़ों को सुनाएगी जो आपको सही मार्ग बताती हैं, और उन आँखों का दर्शन कराएगी जो आपके भविष्य को उज्ज्वल बनाती हैं।

इस संग्रह को संपादित करना मेरे लिए एक अत्यंत संतोषजनक और भावुक अनुभव रहा है। मैं उन सभी कवियों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिनकी ओजस्वी और भावपूर्ण रचनाओं ने इस पुस्तक को जीवंतता प्रदान की है। उनके शब्द गुरु के प्रति हमारी सामूहिक कृतज्ञता और श्रद्धा की अभिव्यक्ति हैं। मैं अपने परिवार और शुभचिंतकों का भी धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने इस पुनीत कार्य में मेरा संबल बढ़ाया। और सबसे बढ़कर, मैं उन सभी गुरुजनों के श्रीचरणों में यह पुस्तक समर्पित करता हूँ, जिनके ज्ञान, प्रेरणा और आशीर्वाद ने मेरे जीवन को दिशा दी और मुझे इस कार्य को पूरा करने की शक्ति प्रदान की। यह पुस्तक उन्हीं के प्रति मेरी अनन्त कृतज्ञता का प्रतीक है।

आशा है कि "ज्ञान के मोती" की ये कविताएँ आपके हृदय को स्पर्श करेंगी, आपको अपने गुरुओं की याद दिलाएंगी, और आपको ज्ञान के सच्चे मार्ग पर निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेंगी।

साभार,

संपादक

कुशाग्र जैन

गुरु महिमा - सुनील कुमार

अंधकारमय जीवन पथ पर,
जीवन ज्योति जलाते हैं।
भले-बुरे में भेद बताकर,
सही राह दिखाते हैं।
गुरु हमें जीना सिखाते हैं।

मात-पिता देते जन्म हमको,
गुरुजन पहचान दिलाते हैं।
अवगुणों को हमारे दूर कर,
गुणवान बनाते हैं।
गुरु हमें जीना सिखाते हैं।

बैर करो न आपस में तुम,
मिलकर रहना सिखाते हैं।
सुपथ पर हमें चलाते,
कुपथ से सदा बचाते हैं।
गुरु हमें जीना सिखाते हैं।

एक साधारण बालक को ये,
सम्राट चंद्रगुप्त बनाते हैं।
ब्रहमा-विष्णु और महेश,

गुरु में ही समाते हैं।

गुरु हमें जीना सिखाते हैं।

गुरु महिमा- सुनील कुमार

गुरुजन के पावन चरणों में,
जो भी शीश झुकाते हैं,
ज्ञान का अनमोल खजाना,
पल भर में पा जाते हैं।

गुरुजन की अमृतवाणी,
निज जीवन में जो अपनाते हैं,
सारे जहां की खुशियां,
अपने कदमों में पाते हैं।

दिव्यज्ञान की ज्योति जला,
उर का सब तम मिटाते हैं,
सही-गलत का भेद बता,
जीवन राह दिखाते हैं।

मात-पिता देते जन्म हमको,
गुरुजन पहचान दिलाते हैं,
भवसागर से पार उतरना,
गुरुजन ही सिखलाते हैं।

गुरुजन के पावन चरणों में,
जो भी शीश झुकाते हैं,

जीवन की भवबाधा से,

इक पल में मुक्ति पाते हैं।

रचनाकार परिचय -

सुनील कुमार

शिक्षा- एम.एस-सी., एम.एड.

संप्रति- विज्ञान शिक्षक बेसिक शिक्षा परिषद बहराइच, उत्तर-प्रदेश।

उपलब्धि- 4 एकल तथा 45 साझा संग्रह प्रकाशित। आकाशवाणी व दूरदर्शन केन्द्र से रचनाएं प्रसारित।

सम्मान- इनोवेटिव टीचर्स अवार्ड सहित 400 से भी अधिक सम्मान प्राप्त।

समझा जाएं - अन्नु राठौड़ रूद्रांजली

कभी कभी समझा जाना , सही होने से ज्यादा महत्वपूर्ण होता हैं।

कभी- कभी हमें एक शानदार तेज दिमाग की जरूरत नहीं होती,... बल्कि कभी कभी जरूरत होती हैं ,हमें एक धैर्यवान दिल की भी जो हमारी बात सुने।

कभी - कभी हमें ऐसी गहरी आंखों की जरूरत नहीं होती हैं जो सिर्फ देखती हैं हमारी कमियां,.......
जो देखे हमारी अच्छाई और सच्चाई और महसूस करवाएं, हमे सबसे महत्वपूर्ण।

कभी - कभी हमें उन हाथों की जरूरत नहीं होती जो मदद के लिए आगे बढ़ाए गए हो,....... कभी- कभी हमें जरूरत सी लगती हैं उन खुले हाथों की जो समेट लेते हैं हमे खुद में और एहसास करवाते है एक महफ़ूज़ घर का........!

हमें हर वक़्त उन उंगलियों की जरूरत नहीं होती है, जो हमारी गलतियों पर ही उठाई जाए........ जरूरत होती हैं कभी उस उंगली की भी जो राह भटकने पर हमें सही रास्ता दिखाएं, और हमे मूल्यवान महसूस करवाएं।

हम सभी इंसान हैं ,जो गलतियां करते हैं, अभाव सहते हैं, संघर्ष करते हैं, हार जाते हैं ,कभी पीछे रह जाते हैं सभी से, निराश होते हैं , हताश होते हैं, गिरते हैं, टूटते है और कभी -कभी बिखर से जाते हैं,
मुकम्मल कोई नहीं होता,..... और ना ही कभी होगा।

हम ना ही वो पहले इंसान हैं जिसके जीवन में तकलीफ हैं ,और ना ही आखिरी।

तकलीफें ही तो हैं

आओ किसी अपने से बांट ले,

थोड़ा हंस कर,थोड़ा रोकर

आओ इन पलों को काट ले।

तकलीफें कितनी भी बड़ी हो, दर्द कितना भी बड़ा हो, आज हैं कल नहीं रहेंगे।

ज़िन्दगी में कुछ भी हमेशा के लिए एक जैसा नहीं रहता ,

आज गम ,कल खुशी,

आज आंसू, कल हसीं

लेकिन **ज़िन्दगी ना रही तो कुछ भी तो नहीं रहता** , कोई भी समस्या हमारी ज़िन्दगी से बड़ी नहीं हो सकती, कभी नहीं ......!

हम किसी को देख के मुस्कुराए या ना , लेकिन किसी के मुस्कुराने की वजह जरूर बने.....।

कभी कभी तो हम अपनी ही नहीं अपनों की तकलीफें भी जाने,

उनकी झूठी हंसी के पीछे छुपी हुई गहरी उदासी को पहचाने।

क्यूंकि बहुत भयावह होता हैं-

किसी का हमेशा के लिए चले जाना

किसी हैं का था हो जाना।

रचनाकार परिचय -

नाम - अन्नू राठौड़

व्यवसाय - शिक्षिका

नियमित रूप से विभिन्न पत्र-पत्रिका व पुस्तकों में प्रकाशित

गुरू की छाया - गणेश दादु पवार

गुरु है वो छाया प्यारी,
जो दुख में भी साथ निभाए।
जीवन की कठिन राहों में,
सच्चाई की जो राह दिखाए।।

माँ-बाप से जीवन पाया,
गुरु ने जीना सिखलाया।
अंधकार में जब कुछ ना दिखा,
गुरु ने दीप जलाया।।

हर एक शब्द में उनका ज्ञान,
हर सीख में छुपा वरदान।
गिरते हैं जब हम थककर,
गुरु देते हैं नया उत्साह।।

नहीं चाहिए धन या माला,
गुरु की बस एक दुआ ही काफी।
उनकी नजरें जब होती साथ,
तो मंज़िल भी हो जाती साफ़।।

गुरु पूर्णिमा का यह पर्व,
सिर्फ एक दिन नहीं एहसास है।

कुशाग्र जैन

गुरु के प्रति श्रद्धा और प्रेम,

हर दिन, हर पल खास है।।

गुरु चरणों में शीश झुकाकर,

बनते हैं हम कृतज्ञ इंसान।

गुरु बिना जीवन है सूना,

गुरु ही हैं सच्चा भगवान।।

रचनाकार परिचय -

गणेश दादु पवार (MA.Bed, M.Lib SET)

सीखें कोई पेड़ से - महेश 'काव्यप्रेमी'

पत्थर सहकर फल देना

सीखें कोई पेड़ से ।

कड़ी धूप सहकर छांव देना

सीखें कोई पेड़ से ।

पीकर जहर, प्राण वायु देना

सीखें कोई पेड़ से ।

सतत् जुझना आँधी तुफान से

और फल लगकर लचक जाना

सीखें कोई पेड़ से ।

हर मौसम की कठोरता सहन कर

धरती के श्रंगार बनना

सीखें कोई पेड़ से।

बियाबान जंगलो में रहकर भी

फल-फूल-दवा-मेवे देना

सीखें कोई पेड़ से ।

हर विषमता को सहना और

आशीयाने परिंदों के बनना

सीखें कोई पेड़ ।

सतत् खड़े रहना,मौन धारकर भी

नित नित परोपकार करना

सीखें कोई पेड़ से ।।

रचनाकार परिचय -

साहित्यिक नाम- महेश 'काव्यप्रेमी'

पता- सलुम्बर, जि.सलूंबर (राजस्थान) शिक्षा- स्नातकोत्तर, शिक्षा-स्नातक।

लेखन विधा- कविता, ग़ज़ल, गीत,लेख आदि|

पुरस्कार/सम्मान- विभिन्न साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंचों से| केंद्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली की ओर से आयोजित (2014)उदयपुर के युवा लेखकों में शामिल, सम्मान व रचना-पाठ।

रचना उद्देश्य- आपसी सौहार्द, देशभक्ति एवं मानवीय मूल्यों में वृद्धि के प्रयास/समसामयिक घटनाओं के ईर्दगिर्द।

प्रेरक लेखक- कबीर, महादेवी वर्मा, हरिवंशराय बच्चन, दुष्यंत कुमार। रचना/पुस्तक प्रकाशन- विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं व काव्य गोष्ठियों द्वारा। पहला काव्य-संग्रह प्रकाशनाधीन।

रचना प्रसारण- नियमित विभिन्न साहित्यिक पत्र पत्रिकाओं से साभार। संप्रति- शिक्षक एवं स्वतंत्र लेखन।

गुरु हैं सत्य न्याय का प्रतिबिम्ब - सुनील कुमार चाष्टा

गुरु हैं उज्ज्वल भविष्य का निर्माता

गुरु हैं एक पथदृष्टा सफल सुपथ का

गुरु हैं आशा की उजियारी किरण

गुरु हैं तिमिर का उन्मूलन कर्त्ता

गुरु हैं सुन्दर बगिया का माली

गुरु हैं कुम्भकार नवसृजन पीढ़ी का

गुरु हैं नवयुग का निर्माणकर्त्ता

गुरु हैं पुष्पित कलियों की मुस्कान

गुरु हैं आश्रयस्थल तरु की छाया का

गुरु हैं दृढ़ आधार स्तम्भ वटवृक्ष का

गुरु हैं सत्य न्याय का प्रतिबिम्ब

गुरु हैं स्नेह समर्पण की प्रतिमूर्ति

गुरु हैं विकसित समाज का आदर्श

गुरु हैं अद्भुत असीम ज्ञान का पुंज

गुरु हैं नींव की ईंट नवभारत की

गुरु हैं ईश्वर का परम पूज्य स्वरूप

गुरु हैं वैभव विद्यार्थी की सफलता का

गुरु है सुर संगीत मधुर जीवन का

रचनाकार परिचय -

सुनील कुमार चाष्टा सुरुप शोधार्थी हिन्दी

गुरु बिना ज्ञान अधूरा - शितल शंकर जाधव

गुरु बिना ज्ञान अधूरा,
जीवन पथ हो जैसे अंधेरा।
न हो प्रकाश का दीपक जब,
भटकता मन हो बेचारा।

शब्दों में जो सृजन भरें,
चुप रहकर भी ज्ञान कहें।
संशय हर लें एक दृष्टि से,
ऐसे गुरु हर युग में रहें।

गुरु हैं गीता के सार जैसे,
सच्चाई के पहरेदार जैसे।
अज्ञान को जो जला के राख करें,
सूरज के प्रखर प्रकाश जैसे।

माँ-बाप जीवन देते हैं,
गुरु जीवन को दिशा देते हैं।
पाषाण हृदय को तराश कर,
मानव को देव बना देते हैं।

गुरु बिन कुछ भी संभव नहीं,

वो बिना जीवन में रंग नहीं।

उनके बिना जो शिक्षा पाए,

वो तो बस अधूरा संग नहीं।

गुरु पूजा एक ऋण चुकाना है,

श्रद्धा से सिर झुकाना है।

ज्ञान की ज्योति जो दी हमें,

उसका दीप जलाना है।

गुरु बिना ज्ञान अधूरा है,

सागर में जैसे बूँद अधूरी।

उनके चरणों में नमन् करूँ,

यही है मेरी श्रद्धा पूरी।

रचनाकार परिचय -

शितल शंकर जाधव

आरे कॉलोनी ,गोरेगाव मुंबई

गुरू : शून्य से मोक्ष तक - गजेन्द्र मेनारिया ब्राह्मण टाँटरमाला

प्रस्तावना : गुरु का अर्थ और महत्त्व

"गु" का अर्थ है अंधकार और "रु" का अर्थ है प्रकाश। गुरु वह होता है जो अज्ञान रूपी अंधकार को हटाकर ज्ञान का प्रकाश प्रदान करता है। भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊपर माना गया है। जब शिष्य शून्य होता है - न अनुभव, न ज्ञान, न दिशा - तब गुरु उसे उस शून्यता से उठाकर आत्मज्ञान व मोक्ष की ओर ले जाता है।

श्लोक:

"गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥"

1. गुरु का पहला स्पर्श : शून्य से यात्रा की शुरुआत

एक बालक जन्म से शून्य होता है - उसे न भाषा आती है, न विचार। जीवन के इस अंधकारमय मार्ग पर सबसे पहले माता-पिता उसके पहले गुरु बनते हैं। फिर विद्यालय में शिक्षक, समाज में अनुभव, और अंततः कोई आत्मज्ञानी गुरु उसे वास्तविक मार्गदर्शन देता है।

लघु कथा: एक बार एक बालक ने अपने गुरु से पूछा, “गुरुदेव, ज्ञान क्या है?” गुरु मुस्कुराए, एक खाली कटोरा लाए और उसमें धीरे-धीरे जल भरते गए। बोले, “तुम्हारा मन जब तक खाली नहीं होगा, नया ज्ञान नहीं भर पाएगा।”

शिष्य समझ गया - शून्य बनना ही शुरुआत है।

2. गुरु का रूप : साधक से साधु तक की यात्रा

गुरु केवल एक पढ़ाने वाला नहीं, बल्कि एक जीवन जीने की कला सिखाने वाला होता है। वह शिष्य के भीतर छिपी चेतना को जाग्रत करता है, उसे उसके वास्तविक स्वरूप से परिचित कराता है।

दोहा:

"बिनु सतगुरु ज्ञान न उपजै, सतगुरु मेलि विचार।
सांच कहौं सुन लेहु सबे, राम नाम निज सार॥"

गुरु जीवन की भटकी हुई नैया का मांझी है। जिस प्रकार अर्जुन को श्रीकृष्ण ने गीता ज्ञान देकर धर्मपथ पर चलाया, वैसे ही गुरु अपने शिष्य के संशय दूर करता है।

3. गुरु की कृपा : अज्ञान से ज्ञान तक

गुरु की कृपा से ही शिष्य अज्ञान से ज्ञान की ओर बढ़ता है। यह कृपा बाह्य नहीं, आंतरिक होती है - दृष्टिकोण बदलता है, सोच में नयापन आता है।

श्लोक (शिव संहिता से):

"गुरुवाक्यं जनं मोक्षं, गुरुज्ञानं परं बलं।
गुरुदृष्टि समं नास्ति, तस्मात् गुरुमुपाश्रयेत्॥"

लघु कथा:

स्वामी विवेकानंद ने जब रामकृष्ण परमहंस से प्रश्न किया, “क्या आपने ईश्वर को देखा है?”

गुरु ने उत्तर दिया, “हां, जैसे मैं तुम्हें देख रहा हूं वैसे ही।”वह उत्तर विवेकानंद की पूरी जीवन दिशा बदल गया।

4. शिष्य का धर्म : पूर्ण समर्पण और विश्वास

गुरु चाहे जितना भी महान क्यों न हो, यदि शिष्य में श्रद्धा और समर्पण नहीं, तो ज्ञान नहीं प्राप्त हो सकता।

शिष्य का धर्म है कि वह अपने अहंकार को त्यागकर गुरु के वचनों पर पूर्ण विश्वास रखे।

दोहा:

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय॥"

गुरु की सीख को यदि शिष्य जीवन में उतारता है, तो उसका जीवन स्वयं मोक्ष का मार्ग बन जाता है।

5. गुरु से मोक्ष तक : आत्मा की पूर्णता

अंततः गुरु का कार्य शिष्य को आत्मबोध की अवस्था तक पहुंचाना होता है। मोक्ष केवल मृत्यु के बाद नहीं, बल्कि जीवन में भी सम्भव है - जब मन शांत हो, विकार समाप्त हों और आत्मा अपने स्वरूप को पहचान ले।

गुरु इस अंतिम सत्य की ओर शिष्य का मार्गदर्शन करता है।

लघु कथा:

एक साधक ने वर्षों साधना की, फिर गुरु के पास जाकर बोला, “मैं तैयार हूं, अब मुझे मोक्ष दीजिए।”

गुरु ने मुस्कराकर कहा, “तुम पहले से मुक्त थे, बस इस भ्रम से कि तुम बंधे हो।”

साधक को उसी क्षण आत्मज्ञान हो गया।

उपसंहार : गुरु ही परम साधन है गुरु के बिना जीवन एक अंधेरी गुफा जैसा है। वह हमें शून्य से उठाकर मोक्ष, आत्मबोध, और ब्रह्मज्ञान की ओर ले जाता है। आज भी यदि हम जीवन में किसी योग्य गुरु का सान्निध्य पा जाएं, तो यही सबसे बड़ा सौभाग्य होगा।

अंतिम पंक्ति: "गुरु वह दीपक है, जो न केवल राह दिखाता है, बल्कि शिष्य को भी स्वयं दीपक बना देता है।"

रचनाकार परिचय -

मेरा नाम गजेन्द्र कन्हैयालाल मेनारिया है। मैं भारतवर्ष के राजस्थान राज्य के गौरवशाली जिले चित्तौड़गढ़ के निम्बाहेड़ा तहसील के अन्तर्गत आने वाले टाँटरमाला ग्राम का मुलनिवासी हूँ। वर्तमान में इंजिनियरिंग का छात्र हूँ। मेरा परिवार कृषि और पशुपालन से जुड़ा हुआ है साथ ही शिक्षा के लिए भी अग्रसर है।

गुरु:शिष्य का भाग्य विधाता - समरथ मेनारिया

गुरु - यह शब्द जितना छोटा है, उतना ही गहरा, प्रभावशाली और जीवन को बदल देने वाला होता है। भारतीय संस्कृति में गुरु को ईश्वर से भी ऊपर स्थान दिया गया है। वह केवल एक शिक्षक नहीं होता, वह शिष्य के जीवन का निर्माता होता है - एक ऐसा शिल्पकार, जो शिष्य रूपी कच्ची मिट्टी को तपाकर उसे एक सुंदर, उपयोगी और दिव्य मूर्ति बना देता है। यही कारण है कि गुरु को "शिष्य का भाग्य विधाता" कहा गया है।

गुरु का कार्य केवल किताबी ज्ञान देना नहीं होता, बल्कि वह शिष्य के भीतर छिपे गुणों को पहचानता है, उन्हें तराशता है, और आत्मविश्वास की लौ जलाता है। जब शिष्य जीवन के मार्ग में भटकता है, संशय में पड़ता है, तब गुरु उसकी जीवन नौका का पतवार बनता है। वह न केवल उसे जीवन की दिशा दिखाता है, बल्कि उसे उसकी वास्तविक क्षमता से परिचित कराता है।
प्राचीन काल से ही हमारे इतिहास में अनेक उदाहरण हैं, जहां गुरु ने अपने शिष्य का भाग्य मोड़ दिया। महाभारत में अर्जुन एक श्रेष्ठ धनुर्धर तो था, लेकिन जब वह युद्ध भूमि में मोह वश अपने कर्तव्यों से डगमगाया, तब श्रीकृष्ण ने उसे गीता का उपदेश देकर न केवल कर्तव्य का बोध कराया, बल्कि उसे आत्मज्ञान और मोक्ष के मार्ग पर भी प्रेरित किया।

गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं: "उपदेश्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः।"

अर्थात: "जो तत्व को जानते हैं, वे तुम्हें ज्ञान प्रदान करेंगे।"
गुरु की दृष्टि, उसका अनुभव और उसकी शिक्षा - यही वह अमूल्य रत्न हैं, जो शिष्य के भाग्य को गढ़ते हैं। वह शिष्य को केवल पढ़ाता नहीं, बल्कि उसे जीने की कला सिखाता है। उसे विपरीत परिस्थितियों में डगमगाए बिना आगे बढ़ने का साहस देता है।

एक लघु कथा से समझिए:

एक बार एक युवक अपने गुरु के पास आया और बोला - “गुरुदेव, मेरा भाग्य बहुत खराब है, मैं कुछ भी करता हूँ, विफल हो जाता हूँ।” गुरु मुस्कुराए और उसे जंगल में एक चट्टान पर भेजा, यह कहकर कि - “हर दिन इस चट्टान को तोड़ो।”

युवक रोज़ चट्टान पर हथौड़ा मारता, महीनों तक, परचट्टान नहीं टूटी। थक हारकर वह वापस आया।

गुरु ने उसे वही हथौड़ा फिर से दिया और कहा - “आज एक बार फिर मारो।” उसने जैसे ही मारा, चट्टान टूट गई। गुरु बोले - “देखो, यह एक चोट नहीं थी जिसने चट्टान को तोड़ा, यह उन सैकड़ों चोटों का परिणाम था।

ठीक वैसे ही तुम्हारा भाग्य एक दिन नहीं बनता, पर निरंतर अभ्यास, विश्वास और धैर्य से वह गढ़ा जाता है - और यही गुरु सिखाता है।”

गुरु केवल ज्ञान का दाता नहीं, वह दृष्टि का प्रदाता है। जब शिष्य का आत्मविश्वास डगमगाता है, जब उसका आत्मबल कम होता है, तब गुरु उसे अपने आशीर्वाद और उपदेश से फिर से खड़ा करता है।

कबीरदास कहते हैं:

“गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय॥”

अर्थात, जब गुरु और भगवान दोनों सामने खड़े हों, तो पहले गुरु को प्रणाम करना चाहिए, क्योंकि उसी की कृपा से भगवान की प्राप्ति हुई है।
शिष्य का भाग्य उसके कर्मों से बनता है, लेकिन कर्मों की दिशा गुरु तय करता है। वह बताता है कि कब क्या करना है, और कैसे करना है। सही समय पर उचित निर्णय, संकल्प और त्याग - ये सभी गुरु के मार्गदर्शन से ही संभव होते

हैं। एक सच्चा शिष्य अपने गुरु की बातों को शिरोधार्य करता है, और वही उसे धीरे-धीरे साधक, ज्ञानी और फिर सिद्ध बना देता है।

समर्पण, श्रद्धा और सेवा - जब शिष्य ये तीन गुण अपनाता है, तब गुरु की कृपा से उसका भाग्य निखरता है। गुरु अपने ज्ञान की लौ से शिष्य के जीवन को आलोकित करता है।

एक सुंदर श्लोक में कहा गया है:

“गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥”

गुरु ही ब्रह्मा (सृजनकर्ता), विष्णु (पालनकर्ता) और महेश (संहारकर्ता) हैं। वह स्वयं परब्रह्म हैं - इसलिए गुरु को नमन है।

आज के युग में जब लोग केवल भाग्य को दोष देकर बैठ जाते हैं, तब एक सच्चा गुरु यह सिखाता है कि भाग्य कोई लिखा-पढ़ा दस्तावेज नहीं है, बल्कि यह मेहनत, सोच और विवेक से हर दिन लिखा जाने वाला एक अध्याय है। और उस अध्याय को सुंदर बनाने की कला केवल एक सच्चे गुरु के पास होती है।

इसलिए कहा गया है –

"गुरु वही जो अंधकार में दीप बने, शिष्य वही जो उस दीप से अपने भाग्य को प्रकाशित करे।"

गुरु केवल भविष्य बताता नहीं, वह भविष्य बनाता है।

रचनाकार परिचय -

समरथ मेनारिया

BA,MA English B.Ed

बिनोता,निंबाहेड़ा जिला चितौड़गढ़ राजस्थान

मिला सर्व उपहार है - मनोरमा जैन पाखी

ज्ञान धरा पर बरसा जैसे, मिला सर्व उपहार है।
गुरु चरणों में लगता ऐसे,हर दिन ही त्यौहार है।।

अंतर की जडता टूटी है,नाम लिया जब आपका।
चुप से ही संवाद हुआ अब, साथ मिला है जापका।।
बदली मेरी जीवन धारा,छूटा कारागार है।
गुरु चरणों में लगता ऐसा,हर दिन ही त्यौहार है।।

अंधेरों में घिरती रहती, भटकी रहती आज भी।
क्षण-क्षण बदली जीवन रेखा,बदला सारा साज भी।।
सच्चे पथ की पंथी बनके,कर दूँ क्या टंकार है ।
गुरु चरणों में लगता ऐसा, हर दिन ही त्यौहार है।

डगमग करती नैया मेरी,तुमको ही है थामना।
तुमसे ही तो दृढ़ता आई,कर लूँगी अब सामना ।।
बनता दिव्य विधान तुम्हीं से,तेरा ही उपकार है ।
गुरु चरणों में लगता ऐसा, हर दिन ही त्यौहार है।।

लिखना भी अब बना साधना, पढ़ना भी आराधना।
सागर से भी गहरा जो है, सब कुछ है अब जानना।।
वाणी में चेतनता आई, खुला ज्ञान का द्वार है।
गुरु चरणों में.लगता ऐसा ,हर दिन ही त्यौहार है।।

रचनाकार परिचय -

श्रीमती मनोरमा जैन पाखी (गृहिणी) शौकिया लेखन।

विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में रचनाओं.का प्रकाशन।

लघुकथा,कुंडलिया,दोहा,गीत ,कवितायें ,हाइकु आदि साझा संकलन, कलरव वीरिका और ओस के मोती की संपादिका।

लघुकथा संग्रह एवं बरनाली उपन्यास की सह संपादिका।

स्कूली पत्रिका शारदा की मुख्य संपादिका, जैनधर्म की पत्रिकाये भावना और अवधान की अतिथि संपादक ,जैनिज्म लेखन हेतु तीन बार अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार ,

सम्मान

ग्रामीण क्षेत्र मेहगाँव जिला भिण्ड मध्य प्रदेश की निवासी

जनप्रिय रचना - छैल बिहारी शर्मा "जनप्रिय

होती है निर्मल सदा, बुद्धि करो सत्संग।
ज्ञान,भक्ति, अपनी बढे, शीघ्र ही मिटे कुसंग।।

भाव भक्ति गुरु शक्ति से, मिटे सकल जंजाल।
अमृत वाणी श्रवण से, टलती मृत्यु अकाल।।

जाप करे गुरुमंत्र का, सदा सुबह अरु शाम।
उनके घर छाये खुशी, प्रगति, हर्ष, अविराम।।

राम जपो कीर्तन करो, तुम बस आठों याम।
पूरण हो सब कामना, लगे नहीं कुछ दाम।।

आडंबर जो कर रहा, झूठ मूठ मुस्काय।
गुरुकृपा, सत्संग से, स्वर्ग यहीं मिल जाय।।

आये खाली हाथ थे, जाना खाली हाथ।
राम भजन कर भाव से, कृपा करेंगे नाथ।।

गुरु पूनम पूजन करो, लेकिन रखना ध्यान।
स्वामी जी गुरु चरण रज, स्वीकारो तज मान।।

इस असार संसार से, मुक्ति मिले हे! नाथ।

छाया ऐसी दो मुझे, वरदहस्त रख माथ।।

सकल कुसंगति दोष भी, मिटे नाथ तत्काल।
कृपादृष्टि, आशीष से, चमका दो मम भाल।।

कृपा रहे गुरु आपकी, करूँ नित्य मैं जाप।
स्वस्थ रहे तन मन सदा, मिट जाए सब पाप।।

रचनाकार परिचय -

छैल बिहारी शर्मा "जनप्रिय"

सेवानिवृत्त स्काउट सी.ओ.।

जनप्रिय नाम से रचनाओं का लेखन। विभिन्न प्रेरक एवं सामाजिक मुद्दों से जुड़ी आकर्षक रचनाओं का लेखन।

गुरु – कुशाग्र जैन

गूढ़ रहस्यों का उद्‍घाटक
जीवन ऊर्जा का वह प्रेरक।
सही राह वह हमें दिखाता,
उत्तम जीवन पर हमें लाता।

गुरु मात है पुनर्जन्म से,
गुरु पिता है ज्ञानार्जन से,
गुरु प्रभु है पूरी दुनिया,
गुरु बिन जीवन विकास नहीं है।

रचनाकार परिचय -

कुशाग्र जैन।

कई पुस्तकों का सम्पादन व लेखन। चित्री व देखू बाल साहित्य हिन्दी, वागड़ी व गरासिया भाषा में प्रकाशित। शब्द चित्र का संकलन प्रकाशित। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का समय-समय पर प्रकाशन।